VEER MEGHMAYA

The heritage of India is filled with stories of saints who sacrificed their lives for the benefit of people. These saints gave a new direction and hope to the people through their philosophy and action. One such saint from western India is Veer Meghmaya.

Saint Veer Meghmaya lived around 1000 years ago. At that time, the historical capital of Gujarat was Anhilpur Patan. There was the rule of king Siddhraj Jai Singh Solanki.

At that time, people were longing for water due to famine for many years. The then king, who was a devotee of lord Shiva, got the "Sahastralinga Sarovar" constructed. To pay tribute to the power of lord Shiva, 1008 Shiva temples were also built around the lake with the Shivling.

Despite the construction of the lake, water remained a challenge for the people. On asking the pundits/astrologers, it was told that the water did not come due to the curse of the king. It was told that the remedy would be, if a man with thirty-two qualities, sacrifices himself in the lake. Such a man with thirty two signs was “Veer Meghmaya” who was born in a Dalit Vankar family, near Dholka, in Ranoda village.

Saint Veer Meghmaya voluntarily accepted the sacrifice for the welfare of the people. At that time untouchability was at its peak. He appealed to the king for social justice, for the depressed classes of the area, which was accepted. With this single act of sacrifice, the life of millions of untouchables got transformed. The sacrifice of Veer Meghmaya is always remembered as the great cause of establishing human rights and redemption of the depressed classes.

In modern times, Veer Meghmaya is seen as a liberator of depressed and vulnerable. The government of Gujarat is developing his birth place as millions gather here to pay homage to Veer Meghmaya. With the development of memorial, research centre, library, primary health centre and renovation of temple, the devotees will be greatly benefitted.

Department of Posts is pleased to issue a Commemorative Postage Stamp on Veer Meghmaya and salutes his sacrifice for the welfare of the depressed and vulnerable.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure /Cancellation Cachet : Shri Brahm Prakash

Text : Based on information provided by the proponent



विवरणिका BROCHURE

वीर मेघमाया

भारत की ऐतिहासिक विरासत ऐसे संतों की कहानियों से समृद्ध है, जिन्होंने जन कल्याण के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया। इन संतों ने अपने दर्शनशास्त्र और कार्यो के जरिए आम जनमानस को एक नई दिशा दिखलाई और उनमें नव आशा का संचरण किया। पश्चिमी भारत के ऐसे ही संत हैं वीर मेघमाया।

बलिदानी संत वीर मेघमाया का जन्म लगभग 1000 वर्ष पूर्व हुआ। उस समय गुजरात की राजधानी अन्हिलपुर पाटन थी और वहाँ राजा सिद्धराज जयसिंह सोलंकी का शासन था।

उस समय कई वर्षों तक भीषण अकाल पड़ने के कारण, लोग पानी के लिए तरस रहे थे। तत्कालीन पाटन नरेश, भगवान शिव के परम भक्त थे। उन्होंने ''सहस्त्रलिंग सरोवर'' का निर्माण करवाया और भगवान शिव की शक्ति के प्रति श्रद्धास्वरूप, झील के चारों ओंर शिवलिंग सहित 1008 शिव मंदिर बनवाएँ।

उक्त झील का निर्माण हो जाने के बावजूद प्रजा के लिए पानी की कमी बनी रही। जब इस बारे में पंडितों/ज्योतिषियों से पूछा गया तो उन्होंने बताया कि राजा के श्रापित होने के कारण, सरोवर में जल नहीं आया। इसका उपाय यह बताया गया कि यदि बत्तीस गुण धारण करने वाला कोई व्यक्ति उस झील में अपनी बलि दे, तो इस संकट का परित्राण हो सकता है। ढोलका के निकट रनोडा गांव के एक दलित बुनकर परिवार में जन्में ''वीर मेघमाया'' एक ऐसे व्यक्ति थे, जो बत्तीस गुण सम्पन्न थे।

बलिदानी संत वीर मेघमाया ने प्रजा के कल्याण के लिए स्वेच्छा से बलिदान देना स्वीकार किया। उस समय छुआछूत की कुप्रथा अपने चरम पर थी। वीर मेघमाया ने राजा के समक्ष उस क्षेत्र के दलित और वंचित वर्गों के लिए सामाजिक न्याय की मांग की, जिसे स्वीकार कर लिया गया। अपने प्राणों की आहुति देकर वे लाखों अछूतों के जीवन में युगांतरकारी परिवर्तन लाए। वीर मेघमाया के बलिदान को मानवाधिकारों की स्थापना और दलित व वंचित वर्गों के उद्धार के महान उद्देश्य से किए गए बलिदान के रूप में याद किया जाता है।

आधुनिक समय में, दलित – वंचित और कमजोर तबके के लोग वीर मेघमाया को श्रद्धाजंलि देने के लिए, उनकी जन्मस्थली पर आते हैं। गुजरात सरकार इस स्थान के विकास हेतु अनेक कार्य कर रही है। यहाँ निर्मित किए जा रहे स्मारक, शोध केन्द्र, पुस्तकालय और प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र के विकास तथा मंदिर के जीर्णोद्वार से भक्तों को काफी लाभ होगा।

डाक विभाग, 'वीर मेघमाया' पर स्मारक डाक – टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है और दलितों तथा वंचित वर्गों के कल्याण के निमित्त उनके बलिदान को नमन करता है।

आभारः–

डाक टिकट/प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका/विरूपण कैशे : श्री ब्रह्म प्रकाश

पाठ : प्रस्तावक से प्राप्त सामग्री से संदर्भित।

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्य	:	500 पैसे
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक टिकटें	:	201600
Stamps Printed	:	201600
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http:/www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार । डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamps, Miniature Sheets, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5-00